P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

यौन शिक्षा के प्रति सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

रोशनी भारिल्य
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर,म0प्र0

सारांश

समाज के निर्माण एवं व्यक्ति के उत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज वर्तमान परिस्थितियों का अवलोकन करें तो हम देखते हैं कि आज मानव मूल्य नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो गये हैं। युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य देशों का बढ़ रहा प्रभाव यौन संबंधी मूल्यों में गिरावट ला रहा है। समाज में यौन अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। विवाह पूर्व यौन संबंधों में वृद्धि हुई है। युवक–युवतियों में यौन–स्वच्छन्दता बढ़ रही है। परिणामतः सांस्कृतिक प्रदूषण होने के साथ ही एड्स जैसी लाइलाज बीमारी भी फैल रही है। ऐसी स्थिति में भारतीय मूल्यों को पुर्नजीवित करने तथा समाज को विनाश से बचाने के लिए विद्यालयों में यौन शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि अध्यापक अपने दैनिक क्रियाकलापों में इन किशोर छात्र–छात्राओं के साथ विभिन्न प्रकार के अनुभव ग्रहण करता है तथा उनकी शैक्षिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं यौन सबंधी समस्याओं तथा व्यवहारों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करता है। तत्पश्चात समय एवं परिस्थितियों के अनुसार समय–समय पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है।

इस उद्देश्य से सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 200 शिक्षकों (100 पुरूष शिक्षक एवं 100 महिला शिक्षक) का चयन यादृच्छिक रूप से कर न्यादर्श में सम्मिलित किया गया तथा शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु 't' परीक्षण का प्रयोग 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया है।

उक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द : यौन शिक्षा, यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।

प्रस्तावना

''यौन शिक्षा'' किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की जानकारी देना, इनसे संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु सोच को विकसित करना, सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, यौन संबंधी समस्याओं, यौन व्यवहार, यौन स्वास्थ्य आदि के संदर्भ में भ्रांतियों का निराकरण करना इत्यादि कार्य करती है। इसमें मानवीय संबंध, यौन पहचान, लिंग भूमिका, शारीरिक संरचना, यौवनारंभ, प्रजनन प्रक्रिया, मासिक धर्म संबंधी कौशल, गर्भ निरोधकों की जानकारी आदि शामिल है।

किशोरावस्था में होने वाले यौन विकास का प्रभाव व्यक्तित्व के सभी पक्षों पर पड़ता है तथा इससे संबंधित भ्रांतियाँ एवं गलत सूचनाएँ किशोर को गहराई से प्रभावित करती हैं, जो उनके व्यवहार रूचियों एवं भावी जीवन में स्पष्टतः दिखाई देती है। इस अवस्था में होने वाले तनाव, उत्तेजना आदि से निपटने के लिए इस पीढ़ी को विशेष रूप से मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक समर्थन की आवश्यकता होती है। अतः यौन शिक्षा के द्वारा इस पीढ़ी को जागरूक बनाना चाहिए।

मानसिक व बौद्धिक स्थिरता भी किशोरावस्था की पहचान होती है। यही वह समय होता है, जब लड़के व लड़कियाँ विभिन्न प्रकार के यौन व्यवहार विषमलिंगीय, समलैंगिक, हस्तमैथुन आदि आरंभ करते हैं। इस समय यौन विषयक जानकारी के अभाव में भ्रांतियों गलत सूचनाओं आदि के परिणामस्वरूप

यौन संक्रमित रोग तथा यौन अपराध की आशंका सर्वाधिक होती है। उत्तर किशोरावस्था की अनेक समस्याओं, परिवर्तनों व व्यवहार के अनुरूप इस वर्ग के विद्यार्थियों के लिए औपचारिक शिक्षा व्यवस्था मे लागू किए जाने वाले यौन शिक्षा कार्यक्रम की सफलता–विफलता इस संबंध में शिक्षक वर्ग व छात्र–छात्राओं के अभिभावकों के दृष्टिकोण एवं सहयोग पर निर्भर करती है।

अतः अध्ययनकर्त्ता को इस बात की आवश्यकता महसूस हुई कि शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख आयाम शिक्षक यौन–शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण रखते है यह पता लगाया जाए। दूसरी ओर बच्चें को यौन–शिक्षा दी जाये या नहीं इस बात को लेकर बहस या विवाद तो कई बार हुआ है परंतु इस संदर्भ में पर्याप्त नहीं है। अतः अध्ययनकर्त्ता के मस्तिष्क में यह विषय समस्या के रूप में उभरा जिसका निदान इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

साहित्यावलोकन

यूनेस्को (2000) द्वारा दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में 'एड्स' शिक्षा कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें यूनेस्कों ने 'दिल्ली के सरकारी विद्यालय में एड्स शिक्षा' विषय पर एक प्रोजेक्ट तैयार किया। अध्ययन हेतु दिल्ली के विभिन्न जिलों में स्थित 50 विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें लड़के व लड़कियों के विद्यालयों की संख्या समान थी। जिसमें 82 प्रतिशत अध्यापकों ने यह विचार व्यक्त किया कि विद्यार्थियों को यौन शिक्षा दी जानी चाहिए तथा 43 प्रतिशत अध्यापकों ने यौन शिक्षा कार्यक्रम के संचालन हेतु जिम्मेदारी लेने के पक्ष में सहमति दी।

सी.बी.एस.ई. (2000) द्वारा तैयार 'पापुलेशन एंड एडोल्संस एजुकेशन' ए ट्रेनिंग पैकेज' में कहा गया है कि किशोरावस्था में होने वाले अनेक परिवर्तनों, उनसे संबंधित जानकारी का अभाव तनाव, कुंठा व अन्य विकार इतने उग्र हो चुके हैं कि इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती अतः संभवतः इसी से प्रेरित होकर विद्यालयीन शिक्षा से जुड़े केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने यौन शिक्षा से संबंधित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी किया जिसका उपयोग कर प्रशिक्षित विद्यालयों शिक्षकों द्वारा विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं अन्य गतिविधियों की सहायता से अपने विद्यार्थियों को लाभान्वित करने हेतु किया गया।

ओर्जी और एसइमई (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकतर माता–पिता शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने इस बात का समर्थन किया कि विद्यालयी पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा सम्मिलित की जानी चाहिए ताकि अवांछित गर्भधारण रोकने, विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों के बीच स्वस्थ संबंध बढ़ाने, एच.आई.वी./एड्स संक्रमण/ एस.टी.डी. का पैतृक हस्तांतरण रोकने में मदद मिल सकें तथा विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों के बीच स्वास्थ्य संबंध बढ़ाने, एच.आई.वी./एड्स संक्रमण/एस.टी.डी. का पैतृक हस्तांतरण रोकने एवं लिंग संबंधी बातचीत परिणाम और जिम्मेदारियों का ज्ञान देने को बढ़ावा मिल सके।

एपैपा (2013) द्वारा नाइजीरिया के क्रास रिवर स्टेट में माध्यमिक विद्यालय में किए गए एक शोध से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों में किशोरों के लिए यौन शिक्षा की धारणा काफी नकारात्मक है क्योंकि माता–पिता के अनुसार यौन शिक्षा को युवाओं को नैतिक मुद्दों के रूप में प्रोत्साहित नहीं की जानी चाहिए। इसी तरह उत्तरी नाइजीरिया के कानो राज्य में किए गए एक हालिगा अध्ययन से पता चला है कि माता–पिता की धार्मिक शिक्षा और सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों और मूल्यों की वजह से स्कूल में यौन शिक्षा की नकारात्मक धारणा है। फिर भी नाईजीरिया में कई अध्ययनों ने विद्यालयों में यौन शिक्षा शुरू करने की पुष्टि की है। कबारा राज्य में किए गए एक प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन में नाइजीरिया ने बताया कि उत्तरदाताओं के 78 प्रतिशत ने सुझाव दिया है कि स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए (अकन्दे और अकन्दे 2007) ।

गाँधी, जगदीश (2016): यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित एवं पथभ्रष्ट करती हैः–अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे विकसित देशों में विद्यालयों में यौन शिक्षा प्रदान करने से युवा पीढ़ी तन और मन से रोगी बनती जा रही है साथ ही उनका नैतिक तथा चारित्रिक पतन भी हुआ है। इस दुखदायी स्थिति से उबरने का योग तथा आध्यात्मिक शिक्षा ही एकमात्र समाधान है। हमारा मानना है कि यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित एवं पथभ्रष्ट करती है। यौन शिक्षा अनैतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देती है। यौन शिक्षा में आत्मनियंत्रण की शिक्षा नहीं होती। यौन शिक्षा केवल यह बताती है कि यौन क्रिया करते हुए मां को गर्भवती होने से कैसे बचाया जा सकता है। इस तरह स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य बनाए जाने की तैयारी करना केवल अनैतिक आचरण को बढ़ावा देने वाला ही साबित हो सकता है। इस विषम सामाजिक स्थिति से अपने बच्चों को बचाने के लिए हमें स्कूलों में 'यौन शिक्षा की जगह पर योग एवं आध्यात्मिक शिक्षा अनिवार्य रूप से देने की अविलम्ब आवश्यकता है।

त्रिवेदी, संतोष (2016) : स्कूली अध्यापकों के लिए उस समय असहज स्थिति उत्पन्न हो ताजी है जब उन्हें अपने छात्रों को यौन शिक्षा के बारे में जानकारी देनी होती है, लेकिन चैन्नई में कक्षा 3 से ही बच्चों को यौन शिक्षा देने की तैयारी चल रही है। यौन विज्ञानियों का मानना है कि स्कूलों में कक्षा 3 से ही यौन शिक्षा दी जानी चाहिए। यौन विज्ञानियों की एक टीम जिसमें इंडियन एसोसिएशन ऑफ सेक्सोलॉजी के चेयरमेन डॉ0 टी कामराज भी है, कक्षा तीन से यौन शिक्षा देने वाली किताबों को तैयार करने की दिशा में काम कर रही है। डॉ0 कामराज का कहना है कि एक सर्वे कराया गया था, जिसमें अधिकांश छात्र – छात्राएँ यह जानना चाहते थे कि जो वे करना नहीं चाहते उसके लिए इनकार कैसे करें। वे यौन संक्रामक रोगों के बारे में भी जानकारी चाहते थे।

शोध अध्ययन का महत्व

आज का युवा दिशाहीन हो रहा है और इस दिशाहीनता के मूल में बहुत हद तक हमारी शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है। बालक के जीवन में यौन बोध प्रवृत्ति अत्यधिक महत्व डालती है। अतः बालक के समुचित शारीरिक व मानसिक विकास की दृष्टि से उसे यौन संबंधी वांछित जानकारी उचित अवसर पर दिया

जाना जरूरी है। जिसमें यौन शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर यौन शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने की दिशा में प्रयास किये जा सकेगें ताकि उन महत्वपूर्ण भारतीय मूल्यों जैसे – विषमलिंगी के प्रति सम्मान, जीवनसाथी व वैवाहिक जीवन का सम्मान, विवाह पूर्व एवं विवाहोत्तर यौन संबंधों की अवमानना आदि को पुनः जीवंत किया जा सके एवं समाज को विनाश से बचाया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
6. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन

1. अध्ययन सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र रजाखेड़ी व गौरनगर तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन को शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
3. अध्ययन को महिला व पुरूष शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।

शोध प्रविधि

क्षेत्र भ्रमण द्वारा यादृच्छिक विधि से चयनित शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में जाकर संबंधित विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों से अनुमति लेकर न्यादर्श हेतु यादृच्छिक रूप से चयनित 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षिकाओं से संपर्क स्थापित कर प्रश्नावलियाँ भरवाई गईं। प्राप्त प्रदत्तों को वर्गीकृत करके सारणीयन किया गया। तत्पश्चात 't' परीक्षण के माध्यम से परीकल्पनाओं का सत्यापन किया गया और निष्कर्ष निकाले गए। अंत में निष्कर्षों के आधार पर सुझाव दिए गए।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया एवं प्रत्येक विद्यालय से पुरूष एवं महिला शिक्षकों का चयन भी यादृच्छिक विधि से किया गया। संपूर्ण न्यादर्श को निम्न चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

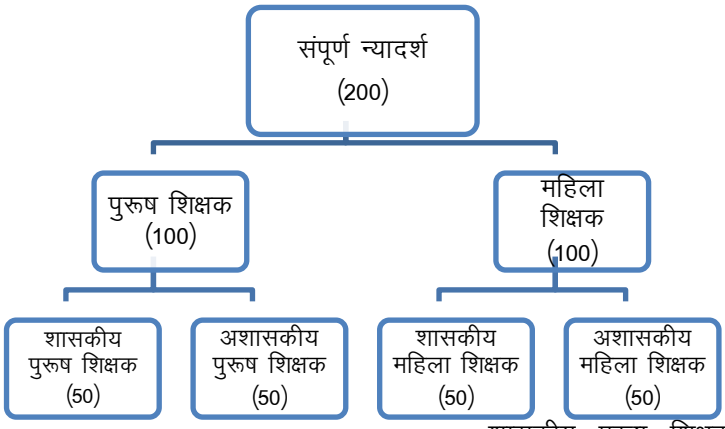

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु चयनित न्यादर्श से प्रदत्त संकलन के लिए प्रोफेसर रवीन्द्र वी पाटिल सहा प्राध्यापक मनोविज्ञान कृषि महाविद्यालय, रायचूर द्वारा निर्मित ''यौन–शिक्षा, मनोवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करने के लिए प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि (S.Ed.) एवं 't' परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षको की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं होता है।

तलिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के बीच यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये 't' परीक्षण लगाया गया । सार्थकता के दोनों स्तरो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया । अतः हमारी परिकल्पना ($H0_1$) सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

परन्तु उसी तालिका के अवलोकन से यह भी स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति की तुलना मे निम्न है।

शासकीय पुरूष शिक्षक व अशासकीय पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन ग्राफ क्रमांक 1 के द्वारा दर्शाया गया है।

परिकल्पना कमांक 2

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 't' परीक्षण लगाया गया। सार्थकता के दोनों स्तरो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया।

अतः हमारी परिकल्पना ($H0_2$) सार्थकता के दोनों स्तरो 0.05 एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात शासकीय उच्चतर माध्यमिक विघालय की महिला शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

परन्तु उसी तालिका के अवलोकन से यह भी ज्ञात होता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है। कि उनकी अभिवृत्ति अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति की तुलना में उत्तम है।

शासकीय महिला शिक्षकों व अशाकीय महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक ग्राफ क्रमांक 2 के द्वारा दर्शाया गया है।

परिकल्पना कमांक 3

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षको तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकां के बीच यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक

विद्यालय की महिला शिक्षकों के बीच यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 't' परीक्षण लगाया गया है। सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया।

अतः हमारी परिकल्पना ($H0_3$) सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

परन्तु उसी तलिका के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति की तुलना में उच्च है।

शासकीय पुरूष शिक्षक व शासकीय महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन ग्राफ क्रमांक 3 के द्वारा दर्शाया गया है।

परिकल्पना क्रमांक 4

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षको एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 't' परीक्षण लगाया गया। सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया।

अतः हमारी परिकल्पना ($H0_4$) सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

परन्तु उसी तालिका के अवलोकन से यह भी स्पष्ट है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षको की अर्थात यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अर्जित अंको के माध्य लगभग समान हैं। अर्थात दोनो की अभिवृत्ति उत्तम है।

अशासकीय पुरूष शिक्षक व अशासकीय महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन ग्राफ क्रमांक 4 के द्वारा दर्शाया गया है।

परिकल्पना कमांक 5

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों के बीच यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 't' परीक्षण लगाया गया। सार्थकता के दोनो स्तरो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया ।

अतः हमारी परिकल्पना ($H0_5$) सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

परंतु उसी तालिका के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है, कि उनकी तुलना मे अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति निम्न है।

शासकीय पुरूष शिक्षक व अशासकीय महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन ग्राफ क्रमांक 5 के द्वारा दर्शाया गया है।

परिकल्पना क्रमांक 6

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 6 से स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अनुसार अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों के बीच यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 't' परीक्षण लगया गया। सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः हमारी परिकल्पना ($H0_6$) सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05. एवं 0.01 पर अस्वीकृत होती है। अर्थात अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विधाालय के पुरूष शिक्षकों तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं होता है।

परन्तु उसी तालिका के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति में अर्जित अंकों के माध्य लगभग समान हैं अर्थात दोनों की अभिवृत्ति उत्तम है।

अशासकीय पुरूष शिक्षक व शासकीय महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांको का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन ग्राफ क्र. 6 के द्वारा दर्शाया गया है।

निष्कर्ष

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से उत्तम पाई गई।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति से उत्तम पाई गई।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से उत्तम पाई गई।
4. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उत्तम पाई गई अर्थात दोनों की अभिवृत्ति उत्तम है।
5. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से उत्तम पाई गई।
6. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उत्तम पाई अर्थात दोनों की अभिवृत्ति उत्तम है।

सुझाव

1. विद्यालयो में यौन शिक्षा प्रदान की जानी चहिये एवं इस दिशा में पुर्व अनुसंधानों के कियान्वयन की आवश्यकता है।
2. विद्यालयो की वार्षिक पत्रिकाओ में यौन–शिक्षा से संबंधित पाठ,य सामग्री का समावेष होना चहिये।
3. शिक्षको की स्थिति को ऊंचा उठाना और उनकी भूमिकाओ के विस्तार और उन्नयन की सतत, जरूरत को पूरा करने का प्रयास करना चाहिये।
4. यौन शिक्षा का प्रत्येक योजना में समावेष होना चाहिये।
5. शिक्षकों और छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति स्वस्थ सोच बढ़ाने के लिये भारत मे अन्य देशों की संस्कृति तथा साहित्यिक सामग्री का संकलन किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गाँधी,जगदीश (2016),अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) (विविध), भारत–दर्शन, हिंदी साहित्यिक पत्रिका*
2. *https://www.bharatdarshan.co.nz/.../antra-rashtriya-yog-diwas.html से पुनर्प्राप्त।*
3. *त्रिवेदी,संतोष,Feb,17 2016 : राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र,राष्ट्रीय खबर retrievedfromhttps://www.patrika.com/story/india/sex-education-in-tn-schools-1901572.html से पुनर्प्राप्त।*
4. *वशिष्ठ के. सी. एवं राजश्री (2012) :माता–पिता और शिक्षकों द्वारा देखे गए यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन,संवाद,ई–जर्नल1(2)। Http://dialog1webs.com/sejv1i2/samwaad_6.pdf से पुर्नप्राप्त।*
5. *यूनेस्कों (2009) : यौन शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी मार्गदर्शनः स्कूलों, शिक्षकों और स्वास्थ्य शिक्षकों के लिए एक साक्ष्यपूर्ण दृष्टिकोण : यौन शिक्षा के लिए* rdZA *www.unesco.org/aids से पुनर्प्राप्त।*
6. *अकन्डे ए. ए. एवं अकन्डे, टी. एम. (2007): ''नाइजीरिया के कवारा राज्य के एक ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच यौन शिक्षा के ज्ञान और अवधारणा का अध्ययन'', नाइजीरिया, नाइजीरियन प्रैक्टिशनर 52(3)।*
7. *ओर्जी, ई. ओ. एवं एसइमई,ओ. ए. (2003): नाईजीरियाई विद्यालयों में यौन शिक्षा का परिचयः माता–पिता, शिक्षकों और विद्यार्थियों की धारणा, जर्नल ऑफ ओब्स्टेट गायनैकॉल, 23 (2), 185–188।*
8. *सी. बी. एस. ई., नई दिल्ली (2000) : जनसंख्या और किशोरावस्था शिक्षा।*
9. *यूनेस्कों (2000):किशोरावस्था शिक्षा (चार माड्यूल्स) – जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम सेवा।*
10. *दिवाकर व महन्नाले (1991) : महाविद्यालयों के अध्यापकों के यौन शिक्षा, के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययनः पुणे,इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च।*
11. *भार्गव, महेश (1985) : आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण, नेशनल साइक्लोजीकल कॉर्पोरेशन,आगरा।*
12. *गेरिट हेनरी ई. : शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग 1972, कल्याणी पब्लिषर्स, आगरा।*
13. *कपिल एच.के.: अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा, 1998–99।*
14. *अरोड़ा पंकज : विद्यालयों में यौन शिक्षा।*
15. *बुच.एम.वी. : तृतीय शोध सर्वेक्षण : शिक्षा में अनुसंधान चतुर्थ शोध सर्वेक्षण : शिक्षा अनुसंधान*

तालिका क्रं. – 1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	57.3	5.80	0.82	0.873	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	60.6	5.12	0.12		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रं. – 2

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	59.8	4.88	0.69	0.786	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	56.6	6.28	0.88		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रं. – 3

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	57.3	5.80	0.82	0.688	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	56.6	6.28	0.88		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रं. – 4

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	60.6	5.12	0.12	0.950	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	59.8	4.88	0.69		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रं. – 5

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	57.3	5.80	0.82	0.156	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	56.6	6.28	0.88		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रं. – 6

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	't' मान	सार्थकता के स्तर		परिकल्पना	
							0.05 1.96	0.01 2.58	0.05	0.01
1	अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक	50	60.6	5.12	0.12	0.243	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक	50	59.8	4.88	0.69		सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

ग्राफ कमांक–1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण

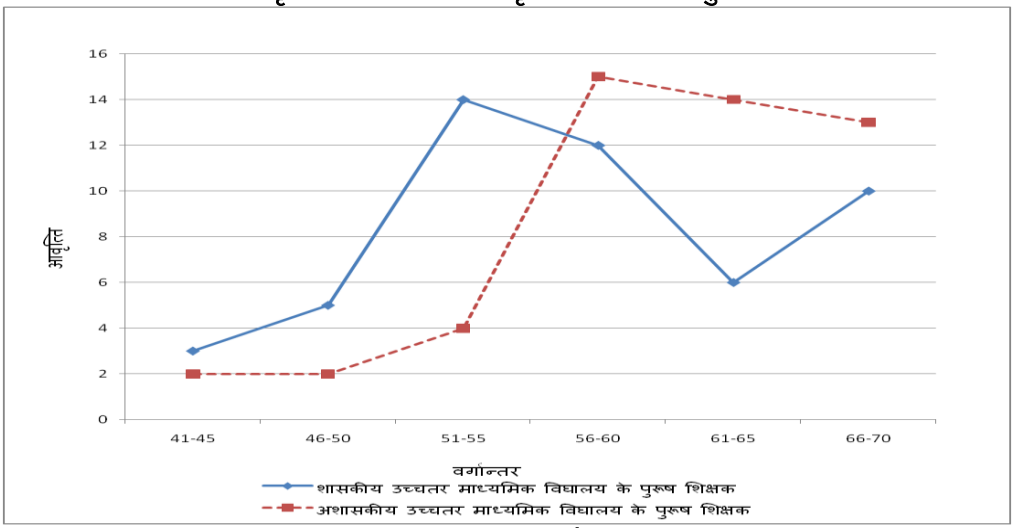

ग्राफ क्रमांक–2

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण

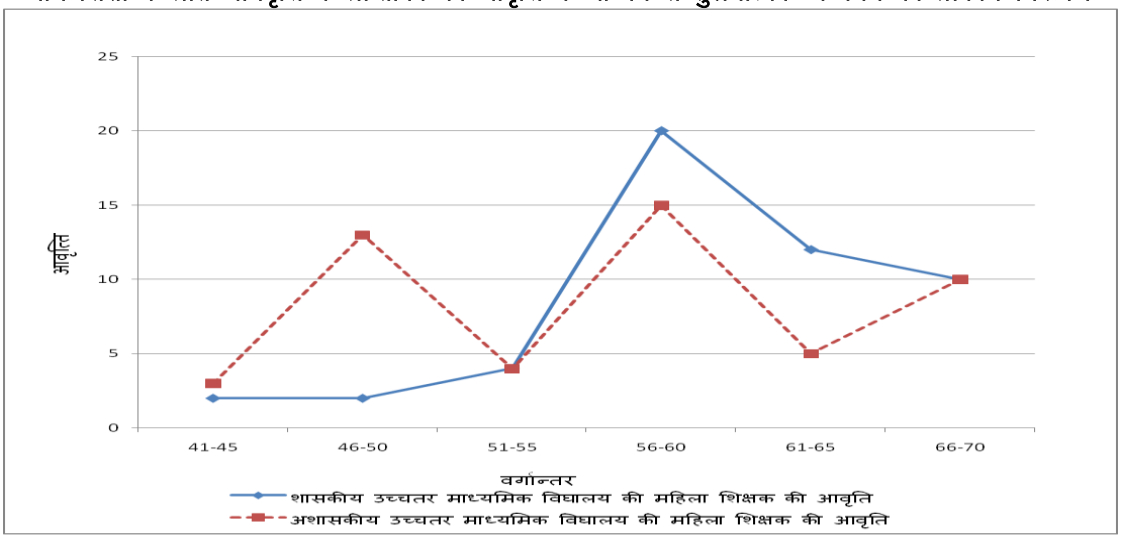

ग्राफ क्रमांक–3

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण

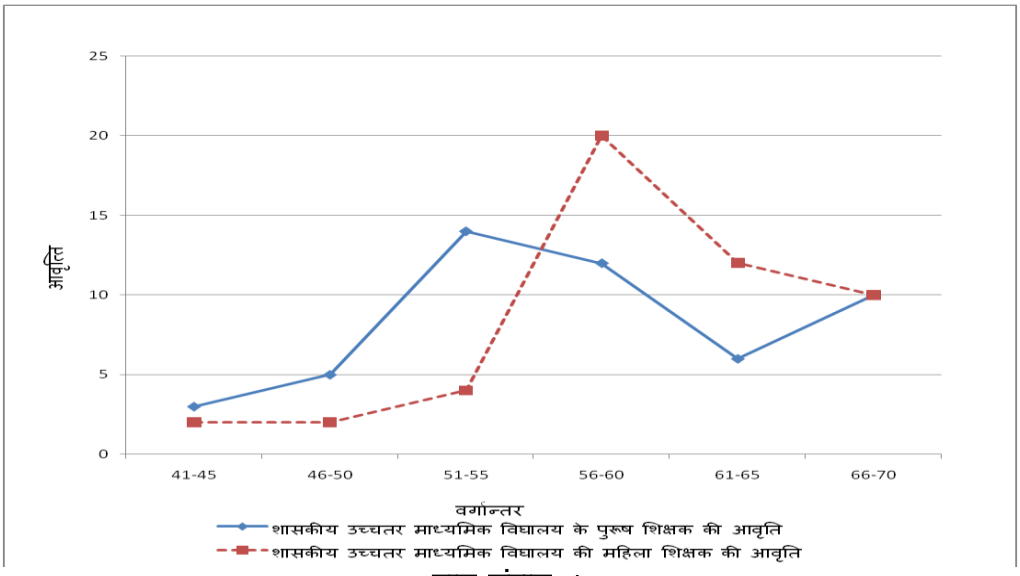

ग्राफ क्रंमाक–4

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण

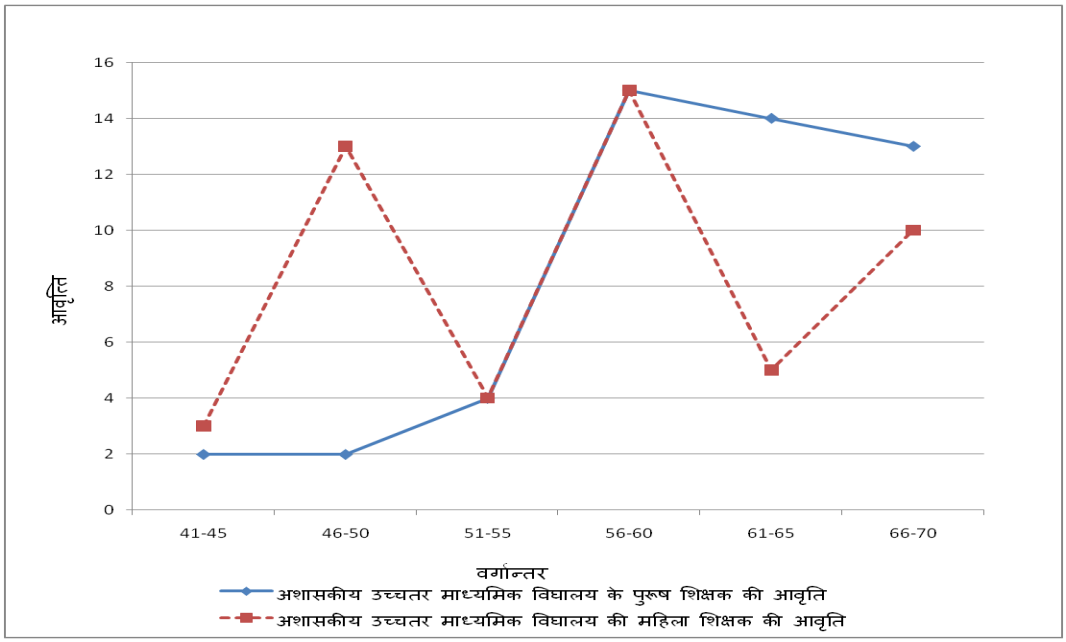

ग्राफ क्रंमाक–5

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण

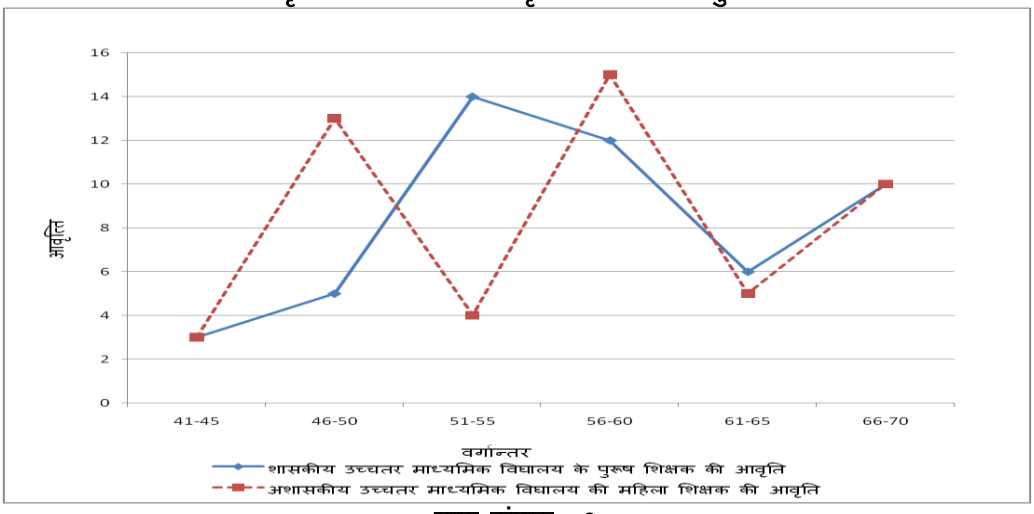

ग्राफ क्रंमाक– 6

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षक एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन का ग्राफीय निरूपण